।। ॐ ह्रीं नमः ।।

बड़ागाँव पूजन एवं कल्याण मन्दिर विधान

मध्य में-ॐ
प्रथम वलय -8
द्वितीय वलय-16
तृतीय वलय-20

रचयिता
प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

बड़ागाँव पूजन एवं कल्याण मन्दिर विधान

कृति - **बड़ा गाँव पूजन एवं कल्याण मन्दिर विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 31/- रु. मात्र (आगामी प्रकाशन हेतु)

-: अर्थ सौजन्य : -
पंकज जैन
1/10941, गली नं. 6, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा दिल्ली-32 मो.
9891068784
[redacted]
1/10768, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 9871225541

अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे तीन लोक के नाथ प्रभु, हे भव्य जनों के उपकारी।
तुम बड़ागाँव में प्रकट हुए, टीले में से हे त्रिपुरारी।।
कई भक्त आपके चरणों में, बहु दूर-दूर से आते हैं।
आह्वानन करते विशद हृदय, चरणों में शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! हृदय में आओगे, हम आशा लेकर आते हैं।
हमको शिव राह दिखाओगे, बस यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्वलोकोत्तम बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त जगतशरण बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

भर जाएँ तीनों लोक प्रभु, हमने इतना जल पी डाला।
न प्यास बुझी हे नाथ मेरी, चेतन कर्मों से है काला।।
अब चेतन को धोने हेतू, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह राग का दावानल, सदियों से झुलसाता आया।
किंचित मन की ना दाह मिटी, हे नाथ शरण को अपनाया।।
भवताप नशाने हेतु प्रभु, यह चंदन घिसकर लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षय रहित श्रेष्ठ अक्षय सुख को, पाने का भाव ना आया है।
जो मिला हमें पद उसमें ही, जीवन का समय गंवाया है।।
अब अक्षय अव्यय पद पाने, उज्ज्वल अक्षत यह लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की सुरभि से केवल, यह तृप्त नाशिका होती है।
दुर्गन्ध आत्म गुण पुष्पों की, यह पुष्प वाटिका खोती है।।
निज के गुण निज में पाने को, यह सुमन संजोकर लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन शुभ खाने से, इस तन का पोषण होता है।
भक्ती मय व्यंजन श्रेष्ठ सरस, निज क्षुधा रोग को खोता है।।
चेतन की क्षुधा मिटे स्वामी, नैवेद्य सरस यह लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीपक की मालाओं से, प्रभु जग का तिमिर नशाते हैं।
है मोह तिमिर अन्तर्मन में, वह तिमिर मिटा न पाते हैं।।
चेतन के दिव्य प्रकाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप द्रव्यमय शुभ, नभ मण्डल को महकाती है।
हे नाथ पाप की ज्वाला में, जो धूम बनी उड़ जाती है।।

कर्मों का धुआँ उड़ाने को, यह धूप जलाने लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ योग ऋतू आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
फल योग्य ऋतू के आते ही, वह फल सारे झड़ जाते हैं।।
अब सरस भक्ति का फल पाने, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ में आने वाली बाधा, हमको व्याकुल कर जाती है।
किन्तू व्याकुलता इस मन की, कर्मों का बंध कराती है।।
अब पद अनर्घ शाश्वत पाने, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
हम बड़ेगाँव के पार्श्वनाथ, की पूजा करने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्त बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।

श्री विघ्न विनाशक अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में धरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणकप्राप्त बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में धरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणकप्राप्त बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहिक्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में धरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणकप्राप्त बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अति मन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में धरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणकप्राप्त बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा दे रहे, कूप से लाके नीर।
पार्श्व प्रभू जी मैट दो, मेरी भव की पीर।।

शान्तये... शान्तिधारा

फूलों से पुष्पाञ्जलिं, करते यहाँ जिनेश।
सुख शान्ती सौभाग्य हम, पाएँ प्रभू विशेष।।

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– भक्ति करने के लिए, हुए भक्त वाचाल।
पार्श्वनाथ भगवान की, गाते हैं जयमाल।।

(छंद राधेश्याम)

उपसर्ग परीषह में तुमने, अतिशय समता को धारा है।
अतएव पार्श्व प्रभु भव्यों ने, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।।
ओले शोले पत्थर पानी, दुष्टों ने तुम पर बरसाए।
तव श्रेष्ठ तपस्या के आगे, सारे शत्रू पद सिरनाए।।
तुमने तन चेतन का अन्तर, प्रत्यक्ष रूप से दिखलाया।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, निश्चय स्वरूप प्रभु ने पाया।।
यह संयम की शक्ती मानो, उपसर्ग प्रभुजी झेले हैं।
जो ध्यान शक्ति की ढाल लिए, हर बाधाओं से खेले हैं।।
सब राग–द्वेष तुमसे हारे, उन पर तुमने जय पाई है।
हम समता रस का पान करें, मन में यह आन समाई है।।
तुम सर्व शक्ति के धारी प्रभु, जीवों को निज सम करते हो।
जो दीन–दुखी द्वारे आते, उनके सारे दुख हरते हो।।
जो शरण प्रभु की पाते हैं, अतिशय शुभ पुण्य कमाते हैं।
व्रत धारण करके पूजा कर, बहु सौख्य सम्पदा पाते हैं।।
जो पूजा करने आते हैं, वह खाली हाथ न जाते हैं।
वह अर्चा करके भाव सहित, सब मनवांछित फल पाते हैं।।

उपसर्ग कमठ ने कीन्हा जब, धरणेन्द्र स्वर्ग से आया था।
फण फैलाया था पद्मावति ने, प्रभु को उस पर बैठाया था।।
फण का शुभ छत्र बनाकर के, क्षण में उपसर्ग नशाया था।
भक्तों ने भक्ती वश होकर, अपना कर्त्तव्य निभाया था।।
था अन्जन चोर अधम पापी, उसने जिनवर को ध्याया था।
ऋद्धी उसने पाई अतिशय, फिर स्वर्ग सुपद को पाया था।।
सीता की अग्नी परीक्षा में, अग्नि को कमल बनाया था।
सूली का सेठ सुदर्शन ने, अतिशय सिंहासन पाया था।।
जब नाग–नागिनी दुखी हुए, तब प्रभु ने संकट हारा था।
द्रोपदी के चीरहरण को भी, जिनवर ने शीघ्र सम्हारा था।।
होकर अधीर प्रभु चरणों में, हम पूजा करने आए हैं।
अपने भावों के उपवन से, यह भाव सुमन शुभ लाए हैं।।
जिस पद को तुमने पाया है, वह अनुपम श्रेष्ठ निराला है।
जो भवि जीवों के लिए शीघ्र, शुभ पदवी देने वाला है।।
प्रभु बड़े गाँव में प्रगट हुए, जब टीला यहाँ खुदाया था।
कई भक्त शरण में आये थे, शुभ जय जयकार लगाया था।।

दोहा– जय पार्श्व जिनेशं, कर्म अशेषं, किए आप निर्मूल प्रभु।
हितकर उपदेशं, दिए विशेषं, भवि जीवों को आप विभु।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त सर्वमंगलकारी बड़ागाँव स्थित चमत्कारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पार्श्व नाम के जाप से, कट जाते सब पाप।
'विशद' कर्म का नाश हो, मिटें सकल संताप।।

इत्याशीर्वादः

श्री बड़ागाँव पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच का, जपूँ निरन्तर नाम।
बड़ागाँव में पार्श्व जिन, के पद करूँ प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ शिवकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पदधारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी यहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामादेवी गाए।।
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नी तप करने वाला, अज्ञानी था भोला-भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तापसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
इक दिन कमठ वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।
धरणेन्द्र पद्मावती तब आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।

धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र बनाया।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।
उत्तर प्रदेश बागपत भाई, बड़ागाँव जिसमें सुखदायी।।
टीला जहाँ रहा मनहारी, महिमा जिसकी अतिशयकारी।
लक्ष्मण सेठ यहाँ के वासी, जिनपे पड़ी विपत्ती खासी।।
सेठ को राजा ने बुलवाया, मृत्यु दण्ड का हुक्म सुनाया।
तब जल्लाद सामने आये, तोप में गोला जो भरवाए।।
पार्श्व प्रभु को सेठ ने ध्याया, चमत्कार अतिशय दिखलाया।
ठण्डा हुआ तोप का गोला, तब प्रभु का जयकारा बोला।।
ऐलक अनन्त कीर्ति जी आए, प्रतिमा की यह बात चलाए।
लोग सभी टीला खुदवाए, पार्श्व प्रभु के दर्शन पाए।।
श्वेत वर्ण की प्रतिमा प्यारी, दिखती है अतिशय मनहारी।
सन् उन्नीस सौ बाइस भाई, फाल्गुन शुक्ल अष्टमी गाई।।
उसी जगह पर कुआँ खुदाया, पानी अमृत जैसा पाया।
इस जल की है महिमा न्यारी, रोग-शोक की नाशनहारी।।
एक भक्त ने जल में नहाया, मुक्ती कुष्ट रोग से पाया।
गंधोदक जो माथ लगाए, मन में अतिशय शांती पाए।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।
दूर-दूर से यात्री आते, गंधोदक का जल ले जाते।
दीन-दुखी जो दर पर आते, वह भी निज सौभाग्य जगाते।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवपुर जाते।
फाल्गुन शुक्ल अष्टमी जानो, मेला अतिशय लगता मानो।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी भाई, को मेला भरता सुखदायी।
आचार्य विशदसागर जी आए, चालीसा यह श्रेष्ठ बनाए।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
बड़ागाँव के पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिवपद भोग।।

(1) आरती श्री पार्श्वनाथ बड़ागाँव

प्रभु पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें।।
प्रभु कर दो भव से पार-आज थारी.....
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्मे हैं काशीराज-आज थारी.....
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज-आज थारी.....
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभु उपकार-आज थारी.....
फाल्गुन सुदी अष्टमी पाए, टीले से प्रभु जी प्रगटाए।
बड़ेगाँव के धाम-आज थारी.....
श्वेत वर्ण की प्रतिमा प्यारी, जो है भारी अतिशयकारी।
हुए कई चमत्कार-आज थारी.....
दीनबन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव दुखहर्त्ता शिवसुख दानी।
करो जगत उद्धार-आज थारी.....
'विशद' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार-आज थारी.....

(2) आरती (तर्ज : लाल दुपट्टा उड़ गया...)

धन्य हुए हैं, पार्श्व प्रभू के, दर्शन पाए हैं।
खुशबू महकी है जीवन में, भाग्य जगाए हैं।।
चलो रे सब झूमो गाओ, प्रभु की आरती गाओ।

नाग युगल को णमोकार का, मंत्र सुनाया था।
'विशद' स्वर्ग में नाग युगल ने, जीवन पाया था।।
प्रभु पार्श्वनाथ की जय-जय-जय, श्री महावीर की जय-जय-जय।
देव युगल प्रभु भक्ती करने, स्वर्ग से आये हैं।। धन्य... ।।1 ।।

तप करने वाले तपसी का, कुतप छुड़ाया था।
अज्ञानी जीवों को मुक्ती, मार्ग दिखाया था।।
जय पार्श्वनाथ जी नमो नमः, जय महावीर जी नमो नमः।
तीर्थ वन्दना करके मन में, हम हर्षाए हैं।। धन्य... ।।2 ।।

सन् बाइस को बड़ागाँव में, प्रभु जी प्रगटाए।
भाव सहित जो तुम्हें पुकारे, इच्छित फल पाए।।
मंदिर बनवाया हाँ भाई, प्रभु को पधराया, हाँ भाई।
फाल्गुन सुदी आठें को मेला, शुभ लगवाए हैं।। धन्य... ।।3 ।।

(3) आरती

अतिशय शुभ दीप जलाए, आरती करने को लाए।
पारस प्रभु दर पे थारी आरती, हो बाबा...
हम सब उतारें, थारी आरती... हो

टीले से प्रभु प्रगट हुए हैं, पार्श्वनाथ हितकारी।
बड़ागाँव में चमत्कार कई, दिखलाए त्रिपुरारी।।
भक्ती से महिमा गाते, चरणों में शीश झुकाते।
करते हैं प्रभु जी थारी आरती... हो बाबा।।1 ।।

सन् उन्निस सौ बाइस जानो, फाल्गुन सुदि आठे शुभ मानो।
मेला लगता शुभकारी, जनता आती है भारी।।
सुरासर मंगल गावें, अतिशय मन में हर्षावे।
नच गाके करते थारी आरती...हो बाबा।।2।।

मन में जो भाव बनाते, दर पे पूरे हो जाते।
गंधोदक माथ लगाते, अतिशय सुख-शांती पाते।।
हम सब मिलकर ध्यायें, चरणों की महिमा गायें।
सब मिल उतारें 'विशद' आरती...हो बाबा।।3।।

श्री पार्श्वनाथ पूजा प्रारम्भ

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, प्रभु चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं कालसर्प दोष निवारणाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा – माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल।।1।।

(छन्द : नयमाली एवं चण्डी)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत्त नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित शत इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, विशद मोक्ष कल्याण।
प्राप्त किये जिन देव ने, तिनको करूँ प्रणाम।।

इति पुष्पाजलिं क्षिपेत्।

कल्याण मन्दिर विधान

अष्टदलकमल पूजा

दोहा– परम ब्रह्म के कोष हैं, पार्श्वनाथ भगवान।
विशद भाव से कर रहे, जिनपद का गुणगान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक)

कल्याण–मन्दिरमुदारमवद्य–भेदि भीताभय–प्रदमनिन्दितमङ्घ्रि–पद्मम्।
संसार–सागर–निमज्जदशेष–जन्तु–पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

चौपाई– हे कल्याण धाम गुणवान, भव सर तारक पोत महान्।
शिव मंदिर अघहारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्र तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धिदायक)

यस्य स्वयं सुरगुरु–र्गरिमाम्बुराशेः स्तोत्रं सुविस्तृत–मति–र्न विभु–र्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ–स्मय–धूमकेतोस् तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

सागर सम हे गौरववान !, सुर गुरु न कर सके बखान।
भंजन किया कमठ का मान, तव करता प्रभु मैं गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जलभय निवारक)

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप–मस्मादृशः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक–शिशु–र्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः।।3।।

तव स्वरूप प्रभु अगम अपार, मंदबुद्धि न पावे पार।
प्रखर सूर्य ज्यों आभावान, उल्लू देख सके न आन।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(असमय निधन निवारक)

मोह–क्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्त–वान्त–पयसः प्रकटोऽपि यस्मान् मीयेत केन जलधे–र्ननु रत्नराशिः।।4।।

मोह की भी हो जाए हान, कह पावे तव को गुणगान।
जल सागर से भी बह जाय, प्रकट रत्न भी को गिन पाय।।4।।

ॐ ह्रीं गहनगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रछन्न धन प्रदर्शक)

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्य–गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज–बाहु–युगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

तुम गुण रत्नों के आगार, मैं मतिहीन बुद्धि अनुसार।
ज्यों बालक निजबाँह पसार, उद्यत करने सागर पार।।5।।

ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संतान सम्पत्ति प्रदायक)

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश ! वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेवमसमीक्षित–कारितेयं, जल्पन्ति वा निज–गिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

तव गुण गाने को लाचार, योगीजन भी माने हार।
ज्यों पक्षी बोले निज बान, त्यों करते हम तव गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्यगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अभीप्सित जनाकर्षक)

आस्तामचिन्त्य–महिमा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्राऽऽतपोपहत पान्थ–जनान्निदाघे–प्रीणाति पद्म–सरसः स–रसोऽनिलोऽपि।।7।।

तव महिमा जिन अगम अपार, नाम एक जग जन आधार।
पवन पद्म सरवर से आय, ग्रीष्म तपन को पूर्ण नशाय ।।7।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुपितोपिदंश विनाशक)

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति, जन्तो क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजंगम-मया इव मध्य-भाग-मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य ।।8।।

मन से ध्याये जिन अर्हन्त, कर्म बन्ध हो शिथिल तुरन्त।
बोले ज्यों चन्दन तरु मोर, नाग डरें भागें चहुँ ओर ।।8।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कमल दल है शुभकार, जो नर पूजें विविध प्रकार।
सुर नर पूजित रहे विशेष, दुखहर्त्ता जिन पार्श्व जिनेश।।

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षोडशदल कमल पूजा

(सर्पवृश्चिकविष विनाशक)

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र ! रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः ।।9।।

(शम्भू छंद)

हे जिनेन्द्र तव दर्शन करके, विपदाओं का होय विनाश।
अंधकार भग जाता जैसे, उदित सूर्य का होय प्रकाश।।
पशुओं को रात्रि में जैसे, आकर घेर रहे हों चोर।
गौ स्वामी को देख भागते, डर के कारण होते भोर।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्गविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तस्कर भय विनाशक)

त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ।।10।।

तुमको हृदय बसाने वाला, हो जाता है भव से पार।
भवि जीवों के लिए आप हो, चिन्तन का अनुपम आधार।।
वायू पूरित मसक तैरकर, हो जाती है सागर पार।
मन मंदिर में तुम्हें बसाने, से जीवों का हो उद्धार ।।10।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जलाग्निभय विनाशक)

यस्मिन्हर्-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः, सोऽपि त्वया रति-पतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन ।।11।।

हरि-हर आदी महापुरुष भी, कामदेव से हारे हैं।
कामदेव के बाण आपने, क्षण में जीते सारे हैं।।
दावानल का पानी जैसे, कर देता है पूर्ण विनाश।
उसी नीर का क्रोधित होकर, बड़वानल कर देता नाश ।।11।

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अग्नि भय विनाशक)

स्वामिन्ननल्प-गरिमाणमपि प्रपन्नास्-त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ।।12।।

अन्य किसी से जिनकी तुलना, करना सम्भव नहीं अरे।
ऐसे प्रभु के गुण अनन्त का, कैसे कोइ गुणगान करे।।
प्रभु को हृदय बसाते हैं जो, भवसागर तिर जाते हैं।
है अचिन्त्य महिमा श्री जिन की, चिन्तन में न आते हैं ।।12।।

ॐ ह्रीं अतिशयगुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जलभिष्टता कारक)

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म–चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नील–द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।13।।

सबसे पहले प्रभू आपने, क्रोध शत्रु का नाश किया।
क्रोध बिना फिर कहो आपने, कैसे कर्म विनाश किया।।
बर्फ लोक में ठण्डा होकर, वृक्षों को झुलसाता है।
क्षमाजयी प्रभु तुमरे द्वारा, बैरी जीता जाता है।।13।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शत्रु स्नेह जनक)

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप–मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज–कोष–देशे।
पूतस्य निर्मल–रुचे र्यदि वा किमन्य–दक्षस्य संभव–पदं ननु कर्णिकायाः।।14।।

श्रेष्ठ महर्षी प्रभू आपकी, महिमा अनुपम गाते हैं।
हृदय कमल में ज्ञान नेत्र से, अन्वेषण कर ध्याते हैं।।
कमल कर्णिका श्रेष्ठ बीज का, है पवित्र उत्पत्ति स्थान।
हृदय कमल के मध्य भाग में, शुद्धातम का होता ध्यान।।14।।

ॐ ह्रीं महन् मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चोरिकागत द्रव्य दायक)

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्म–दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल–भावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातु–भेदाः।।15।।

धातु शिला अग्नी को पाकर, तजती किट्ट कालिमा रूप।
पत्थर की पर्याय छोड़कर, हो जाता है स्वर्ण स्वरूप।।

ऐसे ही संसारी प्राणी, करें आपका निश्चल ध्यान।
परमातम पद पाने वाले, बने वीतरागी विज्ञान।।15।।

ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गहन वन पर्वत भय विनाशक)

अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य–विवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।16।।

जिस शरीर के मध्य बिठाकर, भविजन तुमको ध्याते हैं।
उस शरीर को आप जिनेश्वर, फिर क्यों नाश कराते हैं।।
राग–द्वेष से रहित जीव का, विग्रह ही स्वभाव रहा।
कायद्वेष को शमित किया है, सत्पुरुषों ने पूर्ण अहा।।16।।

ॐ ह्रीं देहदेहिकलहनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(युद्ध विग्रह विनाशक)

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद–बुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीय–मप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विष–विकारमपाकरोति।।17।।

जब अभेद बुद्धी के द्वारा, योगी करें आपका ध्यान।
है प्रभाव यह प्रभू आपका, हो जाते हैं आप समान।।
यह अमृत है ऐसी श्रद्धा, करके जल पीते जो लोग।
विष विकार के मंत्रित जल से, होता है क्या नहीं वियोग।।17।।

ॐ ह्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सर्प विष विनाशक)

त्वामेव वीत–तमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो हरि–हरादि–धिया प्रपन्नाः।
किं काच–कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विविध–वर्ण–विपर्ययेण।।18।।

अज्ञानी प्राणी कहते हैं, तुमको ब्रह्मा विष्णु महेश।
अन्यमतावलम्बी पूजा शुभ, करें आपकी श्रेष्ठ जिनेश।।
निश्चित मानो प्यारे भाई, जिनको हुआ पीलिया रोग।
श्वेत शंख भी पीला दिखता, उस बीमारी के संयोग।।18।।

ॐ ह्रीं सर्वजनवन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नेत्ररोग विनाशक)

धर्मोपदेश–समये सविधानुभावा–दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीव लोकः।।19।।

धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाए तुमरे पास।
मानव की क्या बात शोक तरु, हो अशोक का पूर्ण विनाश।।
सूर्योदय होने पर केवल मानव, ही ना पाते बोध।
वनस्पति भी निद्रा तजकर, पा लेती है पूर्ण विबोध।।19।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उच्चाटन कारक)

चित्रं विभो कथमवाङ्मुख–वृन्तमेव, विष्वक्पतत्यविरला सुर–पुष्प–वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश ! गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।20।।

सघन पुष्प वृष्टी की जाती, देवों द्वारा अपरम्पार।
डन्ठल नीचे ऊर्ध्व पाँखुरी, होती पुष्पों की शुभकार।।
मानो डण्ठल सूचित करते, आते हैं जो तुमरे पास।
कर्मों के बन्धन भव्यों के, हो जाते हैं पूर्ण विनाश।।20।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिशोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानवृद्धि प्रदायक)

स्थाने गंभीरहृदयोदधि–सम्भवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परम–सम्मद–संग–भाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्।।21।।

प्रभु गम्भीर हृदय के सागर, से मुखरित हैं दिव्य वचन।
सच है सुधा समान मानते, तीन लोक में सारे जन।।
अमृतवाणी पीके प्राणी, अक्षय सुख पा जाते हैं।
आकुलता को तजने वाले, अजर–अमर पद पाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मधुर फल प्रदायक)

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुर–चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि–पुंगवाय, ते नूनमूर्ध्व–गतयः खलु शुद्ध–भावाः।।22।।

चँवर ढुराते देव तो पहले, नीचे फिर ऊपर जाते।
मानो जग जीवों को झुककर, विनय शीलता सिखलाते।।
'विशद' भाव से करते हैं जो, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
कर्म नाशकर के वह प्राणी, जाते हैं फिर मोक्ष सदन।।22।।

ॐ ह्रीं सुरचामरसहित विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(राज्य सन्मानदायक)

श्यामं गभीर–गिरमुज्ज्वल–हेम–रत्न–सिंहासनस्थमिह भव्य–शिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश् चामीकराद्रि–शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।

सिंहासन स्वर्णिम कंचनमय, पर स्थित हैं श्री जिनेश।
दिव्य ध्वनि प्रगटाते अनुपम, श्यामल तन में प्रभु विशेष।।
होता स्वर्ण सुमेरू पर ज्यों, काले मेघों का गर्जन।
हर्षित होकर भव्य मोर ज्यों, करें आपका अवलोकन।।23।।

ॐ ह्रीं पीठत्रयनायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शुष्कवनोपवन विनाशक)

उद्गच्छता तव क्षिति-द्युति-मण्डलेन, लुप्त-च्छद-च्छविरशोक-तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।

भामण्डल दैदीप्यमान शुभ, सुर तरु की छवि लुप्त करे।
स्वयं अचेतन होकर भी जो, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ अरे।।
भव्य जीव हे नाथ ! आपकी, स्वयं निकटता में आवे।
वीतराग हो भव्य जीव वह, मोक्ष निकेतन को पावे।।24।।

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान सरोवर में अवगाहन, से होता है धर्मध्यान।
किया गया सोलह काव्यों से, पार्श्वनाथ का शुभ गुणगान।।

ॐ ह्रीं षोडशदल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विंशति दल कमल पूजा

(असाध्यरोग शामक)

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्-नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।

(रोला छन्द)

दुन्दुभि नाद गगन में होवे देवों द्वारा।
मानो चिल्लाकर कहता लो चरण सहारा।।
मोक्षपुरी जाना चाहो तो प्रभु को ध्याओ।
तज प्रमाद हे प्राणी ! तुम भी शिवपद पाओ।।25।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक)

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र-व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः।।26।।

तीन छत्र त्रिभुवन के नाथ बताने वाले।
तारा गण की छवी युक्त हैं श्रेष्ठ निराले।।
त्रिविध रूप धारण कर जैसे चाँद दिखावे।
होकर भाव विभोर प्रभु सेवा को आवे।।26।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वैर-विरोध विनाशक)

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन, कान्ति-प्रताप-यशसामिव संचयेन।
माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्-नभितो विभासि।।27।।

सोना चाँदी माणिक से त्रय कोट बनाए।
तीन लोक के पिण्ड सम्पदा युक्त कहाए।।
कान्ति कीर्ति व तेज पुंज का वर्तुल गाया।
पार्श्व प्रभु का समवशरण जगती पर आया।।27।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यशः कीर्तिप्रसारक)

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वापरत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।

इन्द्रों के मुकुटों की दिव्य सुमन मालाएँ।
नमस्कार के समय चरण में जो गिर जाएँ।।
मानो वह तव चरणों में शुभ जगह बनाएँ।
पाद पद्म को छोड़ और अब कहीं न जाएँ।।28।।

ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आकर्षण कारक)

त्वं नाथ जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्म-विपाक-शून्यः ।।29।।

हुआ अधोमुख पक्व घड़ा सागर में जावे।
गहन जलाशय से मानव को पार करावे।।
भव सिंधू से हुए विमुख हैं संत निराले।
भव्यों को भव तारक अतिशय महिमा वाले।।29।।

ॐ ह्रीं जिनपृष्ठलग्न भयतारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(असंभव कार्यसाधक)

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश !
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः।।30।।

तीन लोक के नाथ आप निर्धन कहलाए।
तीन काल के ज्ञाता हो अज्ञानी गाए।।
तुम अक्षर स्वभावी कोई लिख न पाए।
सर्व चराचर के ज्ञाता प्रभु आप कहाए।।30।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शुभाशुभ प्रश्नदर्शक)

प्राग्भार-संभृत-नभांसि रजांसि रोषा-दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।

कुपित कमठ ने नभ मण्डल में धूल गिराई।
तव तन की छाया को भी वह छू न पाई।।

तिरस्कार की दृष्टी से जो कार्य कराया।
विफल मनोरथ हुआ कर्म का बन्धन पाया।।31।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापितधूल्युपधरवताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दुष्टता प्रतिरोधी)

यद्गर्जदूर्जित-घनौघमदभ्र-भीम-भ्रश्यत्तडिन्-मुसल-मांसल-घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारि कृत्यम्।।32।।

गरजे मेघ चमकती बिजली खूब दिखाई।
जल की वृष्टी महा भयंकर वहाँ कराई।।
फिर भी पार्श्व प्रभु का वह कुछ न कर पाया।
अपने हाथों निज पद मानो खड्ग चलाया।।32।।

ॐ ह्रीं कमठकृतजलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक)

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-प्रालम्बभृद्-भयदवक्त्र-विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख हेतुः।।33।।

महा भयानक नर मुण्डन की धारी माला।
और वदन से निकल रही थी अग्नी ज्वाला।।
भंग तपस्या करने भूत-प्रेत दौड़ाए।
प्रभु का कुछ न बिगड़ा कर्म का बन्ध उपाए।।33।।

ॐ ह्रीं कमठकृत पैशाचिकोपद्रव जयशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भूत-पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक)

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य-माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशाः, पाद-द्वयं तव-विभो भुवि जन्मभाजः।।34।।

पुलकित होकर चरण शरण प्रभु का पा जाते।
तजकर माया जाल तीन कालों में आते।।
विधिवत् करें अर्चना हे जगतीपति तेरी।
होगा जीवन धन्य मिटे भव-भव की फेरी।।34।।

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मृगी उन्माद अपस्मार विनाशक)

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश ! मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
अकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।35।।

(शम्भू छंद)

हे मुनीन्द्र ! हम कई जन्मों से, दुःख उठाते आए हैं।
कानों से हम नाम आपका, फिर भी न सुन पाए हैं।।
मंत्रोच्चार पूर्वक स्वामी, सुने आपका जो भी नाम।
विपदा रूपी नागिन से वह, पा लेते क्षण में विश्राम।।35।।

ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सर्प वशीकरण)

जन्मान्तरेऽपि तव पाद-युगं न देव, मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्।।36।।

चरण कमल में नाथ आपके, कई जन्मों से ना आए।
मनवांछित फल देने वाले, पूजा तव न कर पाए।।
इसीलिए इस जग के प्राणी, करते हिय भेदी अपमान।
शरण आपकी पाई मैंने, पाएँगे हम फिर सम्मान।।36।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनर्थ नाशक दर्शन)

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्मा विभो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते।।37।।

मोह महातम से आच्छादित, खोल सके न ज्ञान नयन।
निश्चय पूर्वक एक बार भी, किए आपके न दर्शन।।
दुःख मर्म भेदी हे स्वामी !, इसीलिए बहु सता रहे।
किये दर्श न पूर्व जन्म में, अतः कर्म के घात सहे।।37।।

ॐ ह्रीं दर्शनीय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(असंख्यकष्ट निवारक)

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन-बान्धव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः।।38।।

प्रभु आपके चरणों की हम, दर्शन पूजन को आए।
यह निश्चय प्रभु नहीं आपको, हृदय में धारण कर पाए।।
भाव शून्य भक्ती करने से, हमने भारी दुःख सहे।
क्रिया भाव से रहित लोक में, फलदायी न कभी रहे।।38।।

ॐ ह्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सर्वज्वर शामक)

त्वं नाथ दुःखि-जन-वत्सल हे शरण्य, कारुण्य-पुण्य-वसते वशिनां वरेण्यः।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखांकरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।39।।

नाथ दुखी जन के वत्सल हे !, शरणागत को एक शरण।
करूणाकर हे इन्द्रिय जेता, योगीश्वर तव दोय चरण।।
हे महेश ! हम भक्ती पूर्वक, झुका रहे हैं पद में शीश।
दूर करो मेरे दुख सारे, यही प्रार्थना दो आशीष।।39।।

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विषम ज्वर विघातक)

निःसख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-मासाद्य सादित-रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो, वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।40।।

अशरण शरण शरण प्रतिपालक, जगतपति जगती के ईश।
गुण अनन्त के धारी भगवन, कर्म विजेता हे जगदीश।।
तव पद पंकज में रहकर भी, ध्यान से हम प्रभु रहित रहे।
इसीलिए हे प्रभुवर हमने, कर्मों के घनघात सहे।।40।।

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अस्त्र-शस्त्र विघातक)

देवेन्द्र-वन्द्य विदिताखिल-वस्तुसार ! संसार-तारक विभो भुवनाधिनाथ।
त्रायस्व देव करुणा-ह्रद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।41।।

अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, वन्दनीय इन्द्रों से नाथ।
भव तारक हे प्रभू ! आप हो, करुणाकर त्रैलोकी नाथ।।
करुणा सागर हे जिनेन्द्र ! प्रभु, दुखिया का उद्धार करो।
महा भयानक दुख सागर से, मुझको भी प्रभु पार करो।।41।।

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्त्री सम्बन्धि समस्त रोग शामक)

यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य भूयाः स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

हे शरणागत के प्रतिपालक, शरण आपकी हम आए।
किञ्चित पुण्य कमाया हमने, भक्ति चरण की जो पाए।।

यही चाहते हम भव-भव में, स्वामी मेरे आप रहो।
हम बन सकें आपके जैसे, बनो मेरे आदर्श अहो।।42।।

ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बन्धन मोचक)

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र ! सान्द्रोल्लसत्पुलक-कञ्चुकितांगभागाः।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः।।43।।

हे जिनेन्द्र ! सावधान बुद्धि से, भव्य पुरुष जो भी आते।
रोमांचित हो मुख अम्बुज के, लक्ष्य बना दर्शन पाते।।
विधी पूर्वक संस्तव रचना, करते हैं जो भव्य महान।
स्वर्गों के सुख पाने वाले, अतिशीघ्र पाते निर्वाण।।43।।

ॐ ह्रीं जन्ममृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आर्या छन्द)

जन नयन-'कुमुदचन्द्र'-प्रभास्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

जन-जन के शुभ नयन कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेश।
स्वर्ग सम्पदा पाने हेतू, करते सहसा स्वर्ग प्रवेश।।
किञ्चित काल भोग करके नर, मानव गति में आते हैं।
कर्म शृंखला शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं।।44।।

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी छंद)

जय-जय जगनायक, सौख्य प्रदायक, मुक्तीदायक हितकारी।
कर्मों के क्षायक, ज्ञान प्रदायक, पार्श्वनाथ मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं विंशति दलकमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- पार्श्वनाथ के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र की, गाता हूँ जयमाल।।

(चौपाई)

लोकालोक अनन्तानन्त, कहते केवल ज्ञानी संत।
चौदह राजू लोक महान्, ऊँचा सप्त राजू पहिचान।।
राजू एक मध्य विस्तार, मध्य सुमेरु अपरम्पार।
दक्षिण दिशा रही मनहार, भरत क्षेत्र है मंगलकार।।
आर्य खण्ड में भारत देश, जिसमें भाई रहा विशेष।
उज्जैनी नगरी में जान, विक्रम राजा रहे महान्।।
उसी नगर में भक्त प्रधान, गंगा में करने स्नान।
वृद्ध महर्षि आए एक, जिनमें गुण थे श्रेष्ठ अनेक।।
योग्य भक्त की रही तलाश, देख भक्त को जागी आश।
श्रेष्ठ वदन था कान्तीमान, सुन्दर दिखता आलीशान।।
धक्का उसे लगाया जोर, वाद-विवाद हुआ फिर घोर।
शिष्य बने जिसकी हो हार, शर्त रखी यह अपरम्पार।।
ग्वाल बाल निकला तब एक, निर्णायक माना वह नेक।
कई श्लोक सुनाए श्रेष्ठ, आगम वर्णित रहे यथेष्ठ।।
ग्वाला उससे था अनभिज्ञ, श्रेष्ठ महर्षि अनुपम विज्ञ।
वह दृष्टांत सुनाए नेक, ग्वाला मुग्ध हुआ यह देख।।
भक्त ने गुरु को किया प्रणाम, कुमुद चन्द रक्खा तब नाम।
क्षपणक जिनका था उपनाम, जिन भक्ती था उनका काम।।
आप गये चित्तौड़ प्रदेश, दर्श पार्श्व के हुए विशेष।
था स्तंभ वहाँ पर एक, उसमें थे संकेत अनेक।।

उस कुटीर का खोला द्वार, शास्त्र मिला जिसमें मनहार।
एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, बन्द हुआ फिर शीघ्र कपाट।।
अदृश वाणी हुई विशेष, भाग्य नहीं पढ़ने का शेष।
एक बार यौगिक ने आन, चमत्कार दिखलाए महान्।।
क्षपणक को वह माने हीन, बने आप थे ज्ञान प्रवीण।
चमत्कार दिखलाओ यथेष्ट, तब मानेंगे तुमको श्रेष्ठ।।
स्वीकारा क्षण में आह्वान, भक्ती करने लगे महान्।
महाकालेश्वर के स्थान, किया कपिल ने यह ऐलान।।
भूप ने कीन्हा यही कथन, क्षपणक शिव को करो नमन्।
कुमुदचन्द आचार्य मुनीश, देख झुकाएँ अपना शीश।।
गढ़ चित्तौड़ के वही महान्, दिखने लगे पार्श्व भगवान।
देखा वही श्रेष्ठ स्तंभ, भरा हुआ लोगों का दम्भ।।
''आकर्णितोऽपि'' आदी यह श्रेष्ठ, गुरु ने बोला काव्य यथेष्ठ।
तेजोमय शुभ आभावान, प्रगटे पार्श्वनाथ भगवान।।
लोग किए तब बारम्बार, जैनाचार्य की जय-जयकार।
जैन धर्म कीन्हा स्वीकार, लोगों ने मुनिवर के द्वार।।
कल्याण मन्दिर यह स्तोत्र, मिला धर्म का अनुपम स्रोत।
करने हम आतम कल्याण, अर्घ्य चढ़ाते प्रभुपद आन।।

(घत्तानन्द छन्द)

जय-जय जिन त्राता, मुक्तीदाता, पार्श्वनाथ जिनवर वन्दन।
जय मोक्ष प्रदाता, भाग्य विधाता, तव चरणों में करूँ नमन्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- पुष्पाञ्जलि यह नाथ, करते हैं हम भाव से।
'विशद' झुकाऊँ माथ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र को।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपाश्र्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पाश्र्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पाश्र्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभु विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी 1008 श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. सरस्वती विधान
72. अर्हत् महिमा विधान
73. धर्मचक्र विधान
74. अर्हत् नाम विधान
76. मृत्युञ्जय विधान
77. विशद पञ्चागम संग्रह
78. जिन गुरु भक्ति संग्रह
79. धर्म की दस लहरें
80. स्तुति स्तोत्र संग्रह
81. विराग वंदन
82. बिन खिले मुरझा गए
83. जिन्दगी क्या है
84. धर्म प्रवाह
85. भक्ति के फूल
86 विशद श्रमण चर्या
87. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
88. इष्टोपदेश चौपाई
89. द्रव्य संग्रह चौपाई
90. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
91. समाधितन्त्र चौपाई
92. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
93. संस्कार विज्ञान
94. बाल विज्ञान भाग-3
95. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
96. विशद स्तोत्र संग्रह
97. भगवती आराधना
98. चिंतवन सरोवर भाग-1
99. चिंतवन सरोवर भाग-2
100 जीवन की मन:स्थितियाँ
101 आराध्य अर्चना
102 आराधना के सुमन
103 मूक उपदेश भाग-1
104 मूक उपदेश भाग-2
105 विशद प्रवचन पर्व
106 विशद ज्ञान ज्योति
107 जरा सोचो तो
108 विशद भक्ति पीयूष
109 विशद मुक्तावली
110 संगीत प्रसून
111 आरती चालीसा संग्रह
112 भक्तामर भावना
113 बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
114 सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
115 विशद महा अर्चना संग्रह
116 विशद जिनवाणी संग्रह
117 विशद वीतरागी संत
118 काव्य पुञ्ज
119 पञ्च जाप्य
120 श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
121 बिजोलिया तीथपूजन आरती चालीसा संग्रह
122 विराजनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह